

## यम नियम

(तोटक छंद)

यमनियम संजम आप कियो, पुनि त्याग बिराग अथाग लह्यो;  
 वनवास लियो मुज मौन रह्यो, दृढ आसन पन्न लगाय दियो. १  
 मन पौन निरोध स्वबोध कियो, लडजोग प्रयोग सु तार लयो;  
 जप भेद जपे तप त्यौहिं तपे, उरसेंहि उदासी लही सबपे. २  
 सब शास्त्रनके नय धारि लिये, मत मंडन जंडन भेद लिये;  
 वह साधन बार अनंत कियो, तदपि कछु हाथ लजु न पर्यो. ३  
 अब क्यों न बिचारत है मनसें, कछु और रहा उन साधनसें?  
 बिन सद्गुरु कोय न भेद लहे, मुज आगल हैं कल बात कहे? ४  
 करुना लम पावत हे तुमकी, वह बात रही सुगुरु गमकी;  
 पलमें प्रगटे मुज आगलसें, जब सद्गुरुचरन सुप्रेम बसें. ५  
 तनसें, मनसें, धनसें, सबसें, गुरुदेवकी आन स्व-आत्म बसें;  
 तब कारज सिद्ध बने अपनो, रस अमृत पावलि प्रेम धनो. ६  
 वह सत्य सुधा दरशावलिंगे, यतुरांगल हे दृगसे भिलहे;  
 रस देव निरंजन को पिवली, गलि जोग जुगोजुग सो जवली. ७

---

પર પ્રેમ પ્રવાહ બઢે પ્રભુસેં, સબ આગમભેદ સુઠર બસેં;  
વહ કેવલકો બીજ આનિ કહે, નિજકો અનુભૌ બતલાઈ દિયે. ૮

